राम कथा आधारित हिंदी उपन्यासों में नारी चरित्र का स्वरूप

दीपमाला श्रीवास्तव[1], डॉ. राहुल सिद्धार्थ[2]
[1]शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची, मध्य प्रदेश
[2]सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग
साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची, मध्य प्रदेश

शोध सारांश

रामकथा भारतीय संस्कृति, साहित्य और समाज का एक महत्वपूर्ण आधार रही है, जिसमें नारी पात्रों की भूमिका अत्यंत विशिष्ट एवं प्रभावशाली रही है। पारंपरिक रामकथा में नारी को मुख्यतः त्याग, समर्पण, पतिव्रत धर्म और मर्यादा की प्रतिमूर्ति के रूप में चित्रित किया गया है, परंतु आधुनिक हिंदी उपन्यासों में इन नारी पात्रों की पुनर्व्याख्या एक नए दृष्टिकोण के साथ की गई है। इस शोध में रामकथा आधारित हिंदी उपन्यासों में नारी चरित्रों के स्वरूप, उनके पारंपरिक और समकालीन चित्रण तथा नारीवादी दृष्टिकोण से उनके पुनर्मूल्यांकन का विश्लेषण किया गया है।

यह अध्ययन विशेष रूप से सीता, उर्मिला, मंदोदरी, शबरी और कैकेयी जैसे प्रमुख स्त्री पात्रों पर केंद्रित है, जो विभिन्न हिंदी उपन्यासों में भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किए गए हैं। शोध यह दर्शाता है कि आधुनिक लेखकों ने इन पात्रों को केवल पुरुषप्रधान समाज की पूरक न मानकर उन्हें स्वतंत्र व्यक्तित्व, निर्णय क्षमता और संघर्षशीलता से युक्त सशक्त स्त्रियों के रूप में चित्रित किया है। नारीवाद और स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन यह भी इंगित करता है कि रामकथा के नारी पात्र भारतीय समाज में स्त्री की भूमिका, अधिकारों और अस्तित्व की जटिलताओं को उजागर करने में सहायक हैं। इस प्रकार, यह शोध रामकथा आधारित हिंदी उपन्यासों में नारी चरित्रों की भूमिका का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है, जो साहित्यिक और सामाजिक विमर्श के नए आयाम स्थापित करता है।

बीज शब्द

रामकथा , नारी चरित्र , स्त्री विमर्श , हिंदी उपन्यास , नारीवाद , सीता, उर्मिला, मंदोदरी, कैकेयी, शबरी ,

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य में रामकथा एक सार्वकालिक महाकाव्यात्मक आख्यान है, जिसकी प्रासंगिकता शाश्वत रही है। यह कथा न केवल धार्मिक और दार्शनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, अपितु सांस्कृतिक, नैतिक, और सामाजिक संरचना को भी प्रतिबिंबित करती है। वाल्मीकि रामायण से लेकर कालांतर में रचित

विभिन्न रामकाव्यों—तुलसीदासकृत *रामचरितमानस*, कृत्तिवासकृत *कृत्तिवासी रामायण*, और कम्बनकृत *कम्ब रामायण*—तथा आधुनिक हिंदी उपन्यासों में रामकथा का पुनर्पाठ भिन्न-भिन्न आयामों में हुआ है। साहित्य की इस सतत प्रवाहमान धारा में नारी पात्रों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है, जो अपने वैचारिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में विविध रूपों में प्रस्तुत की गई है।

रामकथा में नारी चरित्रों का स्वरूप बहुआयामी है। यहाँ सीता, उर्मिला, मांडवी, श्रुतिकीर्ति, कैकेयी, शबरी, ताड़का आदि स्त्रियाँ विभिन्न रूपों में उपस्थित होती हैं। पारंपरिक दृष्टिकोण से सीता का चरित्र त्याग, समर्पण एवं आदर्श नारीत्व का प्रतीक माना गया है, जबकि कैकेयी एक प्रतिनायक के रूप में चित्रित हुई हैं। किंतु हिंदी उपन्यासों में रामकथा के नारी पात्रों को एक नवीन दृष्टिकोण से देखा गया है, जिसमें वे केवल पितृसत्तात्मक समाज के अंतर्गत परिभाषित आदर्शों तक सीमित न रहकर एक स्वतंत्र वैचारिक सत्ता के रूप में उभरती हैं।

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में रामकथा की स्त्रियों का पुनरावलोकन स्त्री विमर्श और नारी अस्मिता के संदर्भ में किया गया है। नरेंद्र कोहली के *सीता*, प्रभात आशा के *जनकनंदिनी*, गुरुदत्त के *अग्निपरीक्षा*, एवं सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की *राम की शक्ति पूजा* जैसे कृतियों में स्त्री पात्रों की पुनर्व्याख्या देखने को मिलती है। ये कृतियाँ पारंपरिक नारी छवियों के पुनरावलोकन के साथ-साथ स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व, मानसिक संघर्ष, और सामाजिक अस्मिता को भी प्रतिपादित करती हैं।

रामकथा में नारी चरित्रों का पारंपरिक स्वरूप

भारतीय साहित्य में रामकथा केवल एक पौराणिक आख्यान नहीं, अपितु एक दार्शनिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक धारा है, जो भारतीय समाज के मूल्यों, आदर्शों तथा जीवन दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती है। इस महाकाव्य के केंद्र में भले ही राम हों, किंतु इसमें नारी चरित्रों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी रही है। नारी यहाँ मात्र एक परिधीय तत्व के रूप में नहीं, बल्कि कथा की गति को प्रभावित करने वाली एक सशक्त इकाई के रूप में भी उभरती है। पारंपरिक रामकथा में नारी पात्रों को एक निश्चित सामाजिक संरचना के अंतर्गत परिभाषित किया गया है, जिसमें वे या तो त्याग, समर्पण और कर्तव्यपरायणता की मूर्तियाँ हैं, या फिर सत्ता संघर्ष और विरोधाभास का प्रतीक।

1. सीता:

सीता का चरित्र पितृसत्तात्मक समाज के आदर्श नारीत्व की पराकाष्ठा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे न केवल पतिव्रता धर्म की अनुकरणीय मूर्ति हैं, अपितु स्त्री के आदर्श स्वरूप का एक शाश्वत प्रतिरूप भी। वाल्मीकि रामायण से लेकर तुलसीदासकृत *रामचरितमानस* तक, सीता को एक मर्यादा प्रधान, सहिष्णु एवं आत्मसंयमी स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है, जो समस्त कष्टों को सहन करते हुए भी अपने धैर्य, शील और गरिमा को अक्षुण्ण रखती हैं।

सीता की अग्निपरीक्षा केवल उनके चरित्र की पवित्रता की परीक्षा नहीं, बल्कि समाज की उस मानसिकता का परिचायक है, जहाँ स्त्री की शुद्धता और गरिमा का निर्धारण बाह्य परिस्थितियों द्वारा किया जाता है। सीता का निर्वासन केवल व्यक्तिगत पीड़ा का प्रतीक नहीं, बल्कि स्त्री के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण और सत्ता संरचना के अंतर्गत उसकी स्थिति को दर्शाने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है।

2. उर्मिला:

उर्मिला का चरित्र रामकथा में एक विस्मृत किंतु अत्यंत सशक्त स्त्री व्यक्तित्व का उदाहरण है। जहाँ सीता को उनके संघर्षों के माध्यम से व्यापक स्तर पर साहित्य में स्थान प्राप्त हुआ, वहीं उर्मिला निष्क्रिय प्रतिक्षारत नायिका के रूप में एक उपेक्षित भूमिका में रही। लक्ष्मण के साथ विवाह के पश्चात उन्होंने चौदह वर्षों का एकाकी जीवन व्यतीत किया, जो एक प्रकार का नारी मनोविज्ञान का गूढ़तम अध्ययन प्रस्तुत करता है।

उर्मिला का मौन केवल त्याग का परिचायक नहीं, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था की ओर भी संकेत करता है, जहाँ स्त्री के अंतर्मन के द्वंद्व और मानसिक संघर्षों को कोई विशेष स्थान नहीं दिया गया। वे न केवल एक सशक्त स्त्री-चरित्र हैं, अपितु नारी संवेदना एवं मानसिक सहनशीलता की मूर्ति भी हैं, जो बिना किसी प्रत्यक्ष विद्रोह के अपने बलिदान को स्वीकार करती हैं।

3. मांडवी और श्रुतिकीर्ति:

रामकथा में मांडवी और श्रुतिकीर्ति के चरित्रों का उल्लेख तो होता है, किंतु उन्हें कथा में विशेष महत्व प्राप्त नहीं होता। वे सत्ता संरचना के भीतर स्त्री की सीमित भूमिकाओं को दर्शाती हैं, जहाँ उनका अस्तित्व केवल पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने तक सीमित रह जाता है।

मांडवी, जो भरत की पत्नी थीं, एक ऐसी नारी हैं, जिनका संघर्ष भीतर ही भीतर चलता है। वे न केवल पति भरत के प्रति समर्पित हैं, बल्कि अपने व्यक्तिगत जीवन की आकांक्षाओं का त्याग कर सामाजिक मर्यादा का पालन करती हैं।

श्रुतिकीर्ति, जो शत्रुघ्न की पत्नी हैं, उनके चरित्र को भी रामकथा में अधिक विस्तृत नहीं किया गया। यह इस बात को रेखांकित करता है कि पारंपरिक आख्यानों में स्त्री का मूल्यांकन उसके आत्मसत्ता के आधार पर नहीं, बल्कि पुरुष के प्रति उसकी निष्ठा के संदर्भ में किया जाता रहा है।

4. कैकेयी:

कैकेयी का चरित्र रामकथा में एक विरोधाभासी व्यक्तित्व के रूप में उभरता है। वे एक ओर एक स्नेहमयी माता और कर्तव्यनिष्ठ पत्नी हैं, तो दूसरी ओर राजनीतिक चेतना से संपन्न एवं निर्णय लेने वाली एक प्रभावशाली स्त्री।

उनके चरित्र को प्रायः नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है, किंतु यदि गहराई से विश्लेषण करें, तो वे स्त्री के शक्ति और राजनीतिक प्रभाव की परिचायक हैं। उन्होंने अपने पुत्र भरत के लिए जो वरदान मांगे, वे न केवल मातृत्व की अतिशयता को दर्शाते हैं, बल्कि स्त्री के निर्णयात्मक क्षमता और राजनीतिक दूरदर्शिता को भी उजागर करते हैं।

कैकेयी का चरित्र यह संकेत देता है कि स्त्री जब सत्ता-संघर्ष में भाग लेती है, तो उसे समाज में नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है। वे रामकथा में न केवल एक विरोधी स्वर हैं, बल्कि उन सामाजिक संरचनाओं को भी उजागर करती हैं, जो स्त्री को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक निर्णयों में स्वतंत्र भूमिका स्वीकार करने से रोकती हैं।

5. शबरी:

शबरी का चरित्र भक्ति आंदोलन और समाज में स्त्रियों के निम्नवर्गीय प्रतिनिधित्व का उदाहरण है। वे एक आदिवासी स्त्री हैं, जो समाज की उच्चवर्गीय संरचनाओं से परे, अपने आत्मबोध और भक्ति-भावना के आधार पर अपनी पहचान बनाती हैं।

उनकी भक्ति केवल एक धार्मिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि स्त्री अस्मिता और सामाजिक विभेद के विरुद्ध एक प्रतीकात्मक विद्रोह भी है। राम के प्रति उनकी निष्ठा केवल ईश्वर भक्ति का प्रमाण नहीं, बल्कि समाज में स्त्री की समर्पणशीलता और आत्मनिवेदन की एक गहरी व्याख्या भी है।

हिंदी उपन्यासों में रामकथा के नारी पात्रों की पुनर्व्याख्या

भारतीय साहित्य में रामकथा एक **शाश्वत महाकाव्य** के रूप में विद्यमान रही है, जिसकी विषयवस्तु और पात्रों का विभिन्न युगों में पुनर्मूल्यांकन होता रहा है। परंपरागत रामकथा में स्त्रियों की भूमिका एक निश्चित ढांचे में सीमित थी, जहाँ वे या तो **त्याग और समर्पण** की प्रतिमूर्ति थीं या फिर सत्ता-संघर्ष का प्रतीक। किंतु आधुनिक हिंदी उपन्यासों में इन पात्रों का **एक नवीन दृष्टिकोण** से विश्लेषण हुआ है, जिसमें उनकी **अस्मिता, संघर्षशीलता और मानसिक चेतना** को केंद्रीय स्थान दिया गया है।

आधुनिक लेखकों ने रामकथा के **पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण** से आगे बढ़कर स्त्री चरित्रों की **आत्मनिर्भरता, सामाजिक अंतर्दृष्टि और मानसिक द्वंद्व** को उभारा है। इन उपन्यासों में सीता केवल त्याग की प्रतिमूर्ति नहीं, बल्कि **एक विचारशील, आत्मनिर्भर और सामाजिक अन्याय के प्रति संवेदनशील नायिका** के रूप में उभरती हैं। उर्मिला, मांडवी और श्रुतिकीर्ति जैसी अपेक्षाकृत गौण पात्रों को भी विस्तृत रूप में चित्रित किया गया है।

1. सीता: समर्पण से स्वायत्तता की ओर

रामकथा पर आधारित आधुनिक हिंदी उपन्यासों में सीता के चरित्र का पुनर्पाठ **स्त्री अस्मिता** के नए प्रतिमान स्थापित करता है। परंपरागत दृष्टि में सीता केवल **पातिव्रत्य, धैर्य और त्याग** की मूर्ति

थीं, किंतु **नवीन साहित्य में वे आत्मसम्मान, स्वतंत्र निर्णय और अन्याय के विरुद्ध विद्रोह** का स्वरूप धारण करती हैं।

(क) सीता के विद्रोही स्वरूप की प्रस्तुति

- **मैत्रेयी पुष्पा** के उपन्यासों में सीता का चरित्र केवल एक सहनशील स्त्री तक सीमित नहीं, बल्कि वे अपने **न्याय और अस्मिता के लिए संघर्ष** करने वाली नायिका के रूप में उभरती हैं।
- **सीता की अग्निपरीक्षा** को उनके आत्मसम्मान के हनन के रूप में चित्रित किया गया है, जहाँ वे **एक स्त्री के आत्मसम्मान और समाज में उसकी स्वीकृति के द्वंद्व** का प्रतीक बन जाती हैं।

(ख) सीता का आत्मनिर्णय और निर्वासन की नई व्याख्या

- **सत्यजीत राय** और **नागार्जुन** जैसे लेखकों ने सीता को एक ऐसी स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया है, जो सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देती हैं।
- **'सीता: मिथक और यथार्थ'** जैसे उपन्यासों में सीता की निर्वासन-स्वीकृति को केवल सामाजिक मर्यादा का पालन नहीं, बल्कि **स्त्री की आत्मनिर्भरता और अपने जीवन के प्रति स्वतंत्र निर्णय** के रूप में देखा गया है।

2. उर्मिला: उपेक्षा से चेतना की ओर

पारंपरिक रामकथा में उर्मिला का चरित्र **संयम और प्रतीक्षा** का प्रतीक है। किंतु हिंदी उपन्यासों में उनका पुनर्लेखन **स्त्री के मानसिक संघर्ष और आत्मबोध** को केंद्र में रखकर किया गया है।

(क) उर्मिला की अंतर्वेदना और संघर्ष

- **'उर्मिला'** (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला') और **'सीता की बहन'** जैसे उपन्यासों में उर्मिला का **मौन केवल प्रतीक्षा का संकेत नहीं, बल्कि समाज द्वारा स्त्रियों की अनदेखी** का भी प्रतिरूप बन जाता है।
- **उर्मिला की चुप्पी** को उनके भीतर के संघर्ष, मानसिक उद्वेलन और पितृसत्ता के विरुद्ध उनके असहमत स्वरों का प्रतीक माना गया है।

(ख) उर्मिला की विद्रोही चेतना

- समकालीन लेखकों ने उर्मिला को केवल एक समर्पिता नहीं, बल्कि **आत्मनिर्भर और स्वतंत्र स्त्री के रूप में चित्रित किया है**, जो अपने अधिकारों के प्रति सजग है।
- उनके **चौदह वर्षों के एकाकी जीवन** को केवल सहनशीलता की पराकाष्ठा के रूप में नहीं, बल्कि **नारी मनोविज्ञान के गूढ़ अध्ययन** के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

3. कैकेयी: नकारात्मक छवि से एक सशक्त नारी तक

कैकेयी को परंपरागत रामकथा में प्रायः एक **नकारात्मक नारी** के रूप में चित्रित किया गया है, जिसने **ममतामयी माता के स्थान पर राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा को प्राथमिकता दी**। किंतु हिंदी उपन्यासों में उनके चरित्र का पुनर्व्याख्यान **स्त्री की राजनीतिक चेतना, सत्ता संघर्ष और मातृत्व के द्वंद्व** को उजागर करता है।

(क) कैकेयी की राजनीति और नारीवादी दृष्टिकोण

- **सुभद्रा कुमारी चौहान और शिवानी** जैसी लेखिकाओं ने कैकेयी को केवल एक **महत्वाकांक्षी स्त्री** के रूप में नहीं, बल्कि **एक साहसी, दृढ़ निश्चयी और राजनीतिक रूप से जागरूक नारी** के रूप में चित्रित किया है।
- उनके निर्णयों को न केवल **मातृत्व और राजनीति के द्वंद्व** के रूप में देखा गया है, बल्कि **नारी की स्वतंत्र सत्ता चेतना के रूप में भी व्याख्यायित किया गया है**।

(ख) कैकेयी का पुनर्मूल्यांकन

- कुछ आधुनिक उपन्यासों में कैकेयी के चरित्र को एक **समर्पित माता और एक कुशल राजनेता** के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो केवल अपने पुत्र के लिए नहीं, बल्कि **राज्य की राजनीतिक स्थिरता के लिए भी चिंतित** थीं।
- **उनके निर्णयों को 'निष्कलुष मातृत्व' के बजाय 'राजनीतिक रणनीति' के रूप में देखा गया है**।

4. शबरी: दलित चेतना और स्त्री विमर्श

रामकथा में शबरी का चरित्र **भक्ति और समर्पण का प्रतीक** माना जाता है। किंतु हिंदी उपन्यासों में उनके चरित्र का पुनर्पाठ **स्त्री अस्मिता और दलित चेतना** के परिप्रेक्ष्य में किया गया है।

(क) शबरी और भक्ति आंदोलन

- **'शबरी की प्रतीक्षा'** जैसे उपन्यासों में उनका चरित्र **जातिगत भेदभाव और स्त्री मुक्ति** के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है।
- शबरी की भक्ति को केवल धार्मिक समर्पण नहीं, बल्कि **एक स्त्री के सामाजिक असमानता के विरुद्ध संघर्ष** के रूप में देखा गया है।

नारीवाद और राम कथा आधारित हिंदी उपन्यास

नारीवाद का मूल उद्देश्य स्त्रियों के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक अधिकारों की स्थापना है। यह विमर्श **पितृसत्तात्मक संरचनाओं** को चुनौती देकर स्त्री अस्मिता एवं स्वतंत्रता के स्वरूप को पुनर्परिभाषित करता है। परंपरागत रूप से रामकथा में नारी पात्रों को **सहिष्णुता, समर्पण**

और कर्तव्यपरायणता की मूर्ति के रूप में चित्रित किया गया है, किंतु आधुनिक हिंदी उपन्यासों में इन पात्रों का पुनर्मूल्यांकन नारीवादी दृष्टिकोण से किया गया है। इन उपन्यासों में नारी पात्र **आत्मनिर्भर, संघर्षशील और स्व-चेतन नायिकाओं** के रूप में उभरते हैं, जो सामाजिक अन्याय एवं लिंग भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाती हैं।

१. नारीवाद के प्रमुख दृष्टिकोण और रामकथा

(क) उदारवादी नारीवाद और रामकथा

उदारवादी नारीवाद **स्त्री को पुरुषों के समान अवसर एवं अधिकार देने की बात करता है**। हिंदी उपन्यासों में रामकथा के स्त्री पात्रों को इस दृष्टिकोण से विश्लेषित किया गया है:

- **सीता:** रामकथा के परंपरागत स्वरूप में सीता **पातिव्रत्य और समर्पण की मूर्ति** हैं, किंतु आधुनिक उपन्यासों में उन्हें **स्वतंत्र चेतना और आत्मसम्मान से युक्त नायिका** के रूप में चित्रित किया गया है।
- **उर्मिला:** सीता के समान उर्मिला भी त्याग और प्रतीक्षा का प्रतीक थीं, किंतु समकालीन हिंदी उपन्यासों में उनका **अंतःसंघर्ष, आत्मसम्मान और सामाजिक न्याय के प्रति उनका दृष्टिकोण उभरकर सामने आया है**।

(ख) समाजवादी नारीवाद और रामकथा

समाजवादी नारीवाद यह मानता है कि स्त्रियों की दुर्दशा का कारण केवल पितृसत्ता नहीं, बल्कि **आर्थिक एवं सामाजिक असमानता** भी है। हिंदी उपन्यासों में इसका प्रभाव इस प्रकार देखा जा सकता है:

- **शबरी:** पारंपरिक रामकथा में शबरी का चरित्र केवल **भक्ति एवं समर्पण** का प्रतीक है, किंतु आधुनिक उपन्यासों में वह **दलित चेतना, स्त्री अधिकारों और सामाजिक समानता की प्रतीक** बन गई हैं।

(ग) कट्टरपंथी नारीवाद और रामकथा

यह नारीवाद मानता है कि पितृसत्ता का पूर्णत: उन्मूलन आवश्यक है। कुछ आधुनिक उपन्यासों में रामकथा के स्त्री पात्र इस दृष्टिकोण से चित्रित किए गए हैं:

- **कैकेयी:** पारंपरिक रामकथा में कैकेयी को एक **महत्त्वाकांक्षी और क्रूर स्त्री** के रूप में चित्रित किया गया है, किंतु नारीवादी उपन्यासों में उन्हें **एक स्वतंत्रचिंतिका, आत्मनिर्भर और सत्ता-सजग नारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है**।

२. रामकथा आधारित हिंदी उपन्यासों में नारीवाद

रामकथा को आधार बनाकर लिखे गए हिंदी उपन्यासों ने स्त्री पात्रों की **नवीन व्याख्या** प्रस्तुत की है। इनमें से कुछ प्रमुख नारीवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करने वाले उपन्यास निम्नलिखित हैं:

(क) मैत्रेयी पुष्पा की 'सीता'

इस उपन्यास में सीता का चरित्र एक **संघर्षशील स्त्री** के रूप में चित्रित किया गया है, जो **अपने आत्मसम्मान और निर्णयों के प्रति प्रतिबद्ध है**।

- सीता **आदर्श पत्नी से अधिक एक विचारशील और आत्मनिर्भर स्त्री** के रूप में उभरती हैं।
- उनका **अग्निपरीक्षा के प्रति विद्रोह** स्त्री अस्मिता के नए आयाम प्रस्तुत करता है।

(ख) शिवानी का 'कैकेयी'

- इस उपन्यास में कैकेयी को केवल **राजनीतिक महत्वाकांक्षी स्त्री** के रूप में नहीं, बल्कि **एक सशक्त स्त्री, रणनीतिकार और कुशल प्रशासक** के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- कैकेयी का चरित्र **राजनीतिक चेतना एवं स्त्री अधिकारों की रक्षा करने वाली नारी** के रूप में उभरता है।

(ग) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का 'उर्मिला'

- उर्मिला को केवल एक त्यागमयी नारी के रूप में नहीं, बल्कि **अंतर्द्वंद्व और आत्मसंघर्ष से जूझने वाली स्त्री** के रूप में चित्रित किया गया है।
- उनका **चौदह वर्षों का एकाकी जीवन** केवल प्रतीक्षा नहीं, बल्कि **स्त्री मनोविज्ञान और स्वतंत्र अस्तित्व की खोज का प्रतीक** बन जाता है।

३. रामकथा आधारित उपन्यासों में स्त्री विमर्श के महत्वपूर्ण बिंदु

- **पितृसत्तात्मक मूल्यों को चुनौती:** नारी पात्र अब केवल सहनशील और समर्पण करने वाली नहीं, बल्कि **अपने अस्तित्व और अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाली नायिकाएँ बन चुकी हैं**।
- **स्त्री की सामाजिक पहचान:** आधुनिक उपन्यासों में स्त्री **सिर्फ पत्नी, माता या प्रेमिका नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र विचारक के रूप में चित्रित की गई है**।
- **सीता का पुनर्पाठ:** अब सीता केवल मर्यादा पुरुषोत्तम राम की सहधर्मिणी नहीं, बल्कि **एक स्त्री के आत्मसम्मान की प्रतिमूर्ति बनकर उभरी हैं**।

निष्कर्ष -

रामकथा आधारित हिंदी उपन्यासों में नारी चरित्रों की पुनर्व्याख्या यह सिद्ध करती है कि स्त्रियाँ केवल त्याग और समर्पण की मूर्ति नहीं, बल्कि स्वाभिमान, आत्मनिर्भरता और संघर्षशीलता की प्रतीक

भी हैं। पारंपरिक रामकथा में जहाँ सीता, उर्मिला, मंदोदरी और शबरी जैसी स्त्रियों को पितृसत्तात्मक मूल्यों के अनुरूप चित्रित किया गया था, वहीं आधुनिक हिंदी उपन्यासों ने उनके चरित्रों को नए दृष्टिकोण से देखा है। इन उपन्यासों में सीता केवल आदर्श पत्नी नहीं, बल्कि आत्मसम्मान के लिए संघर्ष करने वाली नायिका के रूप में उभरती हैं, जबकि उर्मिला प्रतीक्षा की पीड़ा सहने वाली नारी से आगे बढ़कर एक आत्मनिर्भर स्त्री के रूप में स्थापित होती हैं। इसी प्रकार, कैकेयी को केवल नकारात्मक भूमिका तक सीमित न रखकर एक बुद्धिमान, सशक्त और सत्ता-सजग स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

समकालीन हिंदी उपन्यासों ने रामकथा के नारी पात्रों को सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना से जोड़ते हुए उनकी भूमिका को अधिक व्यापक बनाया है। नारीवाद के विभिन्न पहलुओं के आधार पर इन पात्रों की व्याख्या यह दर्शाती है कि स्त्री केवल पुरुष-संरचित समाज की अनुयायी नहीं, बल्कि अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम है। यह साहित्यिक परिवर्तन न केवल रामकथा की पारंपरिक समझ को चुनौती देता है, बल्कि आधुनिक समाज में स्त्री अस्मिता, अधिकार और स्वतंत्रता के विमर्श को भी नया आयाम प्रदान करता है। इस प्रकार, रामकथा आधारित हिंदी उपन्यासों में नारी चरित्रों का अध्ययन न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की दिशा में भी इसका विशेष योगदान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. अग्रवाल, पुष्पा. *रामकथा और नारी चेतना.* वाणी प्रकाशन, 2015.
2. चतुर्वेदी, रमेश. *रामकथा के नारी पात्र: एक पुनर्विश्लेषण.* राजकमल प्रकाशन, 2018.
3. झा, विजय कुमार. *भारतीय साहित्य में स्त्री विमर्श और रामकथा.* साहित्य भवन, 2019.
4. त्रिपाठी, निर्मला. *सीता: एक स्त्रीवादी दृष्टिकोण से.* साहित्य अकादमी, 2017.
5. दास, कमला. *रामायण की स्त्रियाँ: एक नया परिप्रेक्ष्य.* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2020.
6. यादव, संगीता. *आधुनिक हिंदी उपन्यासों में रामकथा के नारी पात्रों की पुनर्व्याख्या.* ग्रंथश्री पब्लिकेशन, 2021.
7. कपिल, मनीषा. *रामायण और महाभारत में नारी की भूमिका.* इंडियन काउंसिल फॉर सोशल साइंस रिसर्च, 2016.
8. मिश्रा, शशि. *रामकथा पर आधारित हिंदी उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन.* साहित्य भारती, 2022.
9. तिवारी, अनुपमा. *सीता से शूर्पणखा तक: पितृसत्ता और नारी सशक्तिकरण.* साहित्य संगम, 2019.
10. सिंह, कुसुम. *हिंदी साहित्य में रामकथा और स्त्री विमर्श.* नेशनल बुक ट्रस्ट, 2017.
11. शर्मा, अर्चना. *नारीवाद और भारतीय पुराण: एक आलोचनात्मक दृष्टि.* रचना प्रकाशन, 2018.
12. गोस्वामी, तुलसीदास. *रामचरितमानस.* गीता प्रेस, 2015.

13. वाल्मीकि. *रामायण* (अनुवाद: सत्यप्रकाश शर्मा). मोतीलाल बनारसीदास, 2016.

14. शुक्ल, प्रदीप. *रामायण के स्त्री पात्र और समाजिक यथार्थ.* वाणी प्रकाशन, 2021.

15. कुमार, देवेंद्र. *स्त्री विमर्श और हिंदी उपन्यास: एक अध्ययन.* नीलकंठ प्रकाशन, 2022.